पी.साईनाथ की पत्रकारीय दृष्टि : उपयोगिता एवं प्रासंगिकता

अनुक्रमणिका

घोषणा पत्र / प्रमाण पत्र

भूमिका

1.अध्याय - एक : प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि 05-37

1.1 सारांश

1.2 साहित्यिक का सर्वेक्षण

1.3 शोध प्रणाली

1.4 उद्देश्य एवं क्षेत्र

1.5 उपकल्पना

1.6 शोध का महत्त्व

1.8 शोध विषय की मौलिकता

2.अध्याय – दो : भारतीय पत्रकारिता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य 41-71

2. 1 भारतीय नवजागरण और भारतीय पत्रकारिता का आविर्भाव

2.2 पत्रकारिता का शुरूआती दौर और उसके मार्ग की कठिनाईयां

2.3 राष्ट्रीय भाषा की परिकल्पना और पत्रकारिता का परिदृश्य

2.4 पत्रकारिता के विभिन्न चरण

2.5 वैश्विक एवं भारतीय संघर्ष और प्रेस

2.6 स्वतंत्र भारत में पत्रकारिता और व्यवसायिकता

3. अध्याय - तीन : भूमण्डलीकरण भारतीय पत्रकारिता :समग्र अंतर्संबंध 72-99

3 .1 वैश्वीकरण का इतिहास और प्रवृति

3.2 एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था और नव साम्राज्यवाद

3.3 बड़ी पूंजी का खेल और सूचना क्रांति

3.4 आर्थिक ,सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

4. अध्याय –चार : पी. साईनाथ की पत्रकारिता :विशिष्टताएँ एवं योगदान .100-135

4 .1 'तीसरी फसल ' की रिपोर्टों का पत्रकारीय दृष्टि से विश्लेष्ण

4. 2 'द हिन्दू ' के मानवीय रिपोर्टों का विश्लेष्ण

4. 3 पत्रकारिता के बदलते प्रतिमानों की दृष्टि से विश्लेष्ण

4. 4 उपयोगिता एवं प्रासंगिकता का अध्ययनपरक विश्लेष्ण

निष्कर्ष और सुझाव 136-143

5 .1 निष्कर्ष

5.2 सुझाव

5.3 टिप्पणी

सन्दर्भ ग्रन्थ **सूची** **144-150**

परिशिष्ट **151-182**